अगर आप भागवत कथा के नोट्स प्राप्त करना चाहते हैं। तो आप श्री राम देशिक प्रशिक्षण संस्थान से मंगवा सकते हैं।

स्पीड पोस्ट के द्वारा जल्द ही आपके पास पहुंच जाएंगे।

साथ ही में हमारे विद्यालय के ऑफिशियल ग्रुप पर लाइफटाइम आपको सदस्यता प्राप्त होगी। नोट्स का पेपर क्वालिटी बहुत अच्छा रहेगा उसकी बाइंडिंग भी विधिवत रहेगी और कलर प्रिंट रहेगा।

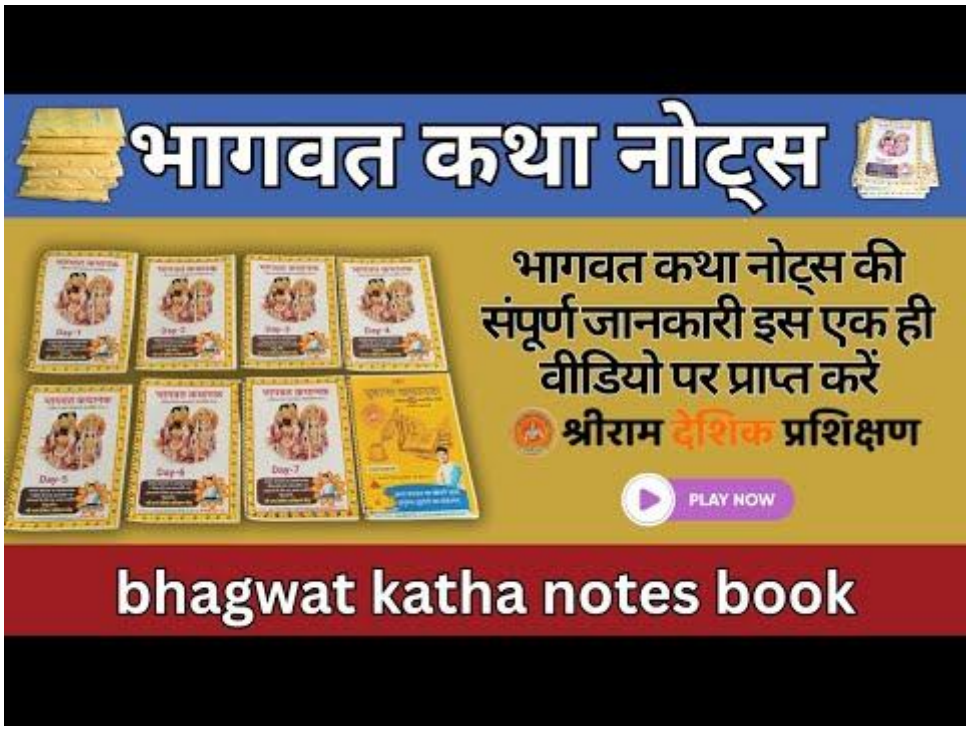

(संपूर्ण सप्ताहिक कथा का पीडीएफ नोट्स बुक) प्राप्त करने के लिए आप दो माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं। (1) आप सप्ताहिक कथा की पीडीएफ बुक ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं जिसका शुल्क ₹6100है। (2) पीडीएफ बुक हमारे द्वारा प्राप्त करने पर केवल ₹5100 पर प्राप्त हो जाएगी।

(संपूर्ण सप्ताहिक कथा का पीडीएफ नोट्स बुक) मे आपको क्रम से 7 दिनों में कहीं जाने वाली कथा प्राप्त होगी, जिसमें श्लोक, चौपाई, छंद , सोरठा, सवैया, भजन और दृष्टांत आदि के साथ । नये प्रवक्ताओं के लिए यह भागवत कथा नोट्स बुक बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी । इसमें बड़ी सरलता के साथ पूरा विवरण दिया गया है। **इसकी न्योछावर दक्षिणा सामान्य दक्षिणा से थोड़ा ज्यादा है लेकिन इसका संकलन करने में और टाइपिंग आदि में बहुत ज्यादा मात्रा में धनराशि लगी है।**

demo notes

bhagwat katha notes pdf भागवत कथा नोट्स

(संपूर्ण सप्ताहिक कथा का पीडीएफ नोट्स बुक) मे आपको क्रम से 7 दिनों में कहीं जाने वाली कथा प्राप्त होगी, जिसमें श्लोक, चौपाई, छंद , सोरठा, सवैया, भजन और दृष्टांत आदि के साथ ।

अगर आप भागवत सप्ताहिक कथा के नोट्स व शिव कथा के नोट्स प्राप्त करना चाहते हैं। तो इस लिंक के द्वारा आप आर्डर कर सकते हैं स्पीड पोस्ट के द्वारा जल्द ही आपके पास पहुंच जाएंगे।

..

Demo notes

* मंगलाचरण के श्लोक*

अस्मद गुरुभ्यो नमः , अस्मत परम गुरुभ्यो नमः, अस्मत सर्व गुरुभ्यो नमः , श्री राधा कृष्णाभ्याम् नमः, श्रीमते रामानुजाय नमः

लम्बोदरं परम सुन्दर एकदन्तं, पीताम्बरं त्रिनयनं परमंपवित्रम् ।
उद्यद्धिवाकर निभोज्ज्वल कान्ति कान्तं, विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि।।

अखंड मंडलाकारं व्याप्तम येन चराचरम ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।।

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं , जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गः, जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः॥

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं,
बिभ्रद् वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन गोपवृन्दैः,
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ।।

श्रीराम राम रघुनंदन राम राम, श्री राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम रण कर्कश राम राम, श्रीराम राम शरणम् भव राम राम ।।

श्रीरामचंद्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचंद्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचंद्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचंद्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।।

माता रामो मत्पिता रामचंद्रः , स्वामी रामो मत सखा रामचंद्रः ।
सर्वस्वं मे रामचंद्रो दयालु, र्नान्य जाने नैव जाने न जाने ।।

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे
रघुनाथाय नाथाय सीताया पतये नमः।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षक -आचार्य शिवम मिश्र जी । www.ramdesikprashikshan.in । मो॰ 8368032114

रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृग वराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।।।७।।
अंजना नंदनं वीरं जानकी शोक नाशनं।
कपीश मक्ष हंतारं वंदे लंका भयंकरं ॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिं ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥
भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम बपु एक।
इनके पद वंदन कीएँ नासत विघ्न अनेक ।।

श्रीमद्भागवत महापुराण की जय- भूमिका

भागवत महापुराण भूमिका —अनंतकोटि ब्रह्मांड नायक, अचिंत्य कल्याण गुणगण निधान, सर्वेश्वर, सर्वाधिपति, अकारण करुणा वरुणालय, अकारण करुणा कारक, सकल जनकल्याण शापहारक, परात्पर परब्रह्म, अनंतकोटि कंदर्पदर्प दलन पटीयान, निर्गुण निराकार, सगुण साकार, जगदैक बंधु, करुणैक सिंधु, सच्चिदानंदघन परमात्मा **श्रीकृष्ण एवं श्री राधारानी** जी के युगल चरणारविंदों में दास का बारंबार प्रणाम। समुपस्थित भगवत् भक्त, भागवत कथा अनुरागी सज्जनों, भक्तिमयी मातृशक्ति, भगिनी-बांधवों —

सियाराममय सब जग जानी, करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।

भगवतः इदं स्वरूपं भागवतम् — जो भगवान का स्वरूप है, उसे 'भागवत' कहते हैं।

तेन इयं वाङमयी मूर्तिः प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि। — यह श्रीमद्भागवत भगवान श्रीकृष्ण की प्रत्यक्ष शब्दमयी मूर्ति है।

भगवतः प्रोक्तं भागवतम्। — भगवान ने जिसका उपदेश किया है, उसे 'भागवत' कहते हैं।

भगवतः चरितं यस्मिन् तत् भागवतम्। — जिसमें भगवान के परम पवित्र चरित्र का वर्णन किया गया है, उसे 'भागवत' कहते हैं।

भगवत्याः श्रीराधायाः गुप्तचरितं यस्मिन् तत् भागवतम्। — जिसमें श्री राधारानी के गुप्त चरित्र का वर्णन किया गया है, उसे 'भागवत' कहते हैं।

किया जाने वाला ताप और आधिभौतिक – प्राणियों के द्वारा प्रदान किए जाने वाला ताप, इन त्रिविध तापों का जो नाश करने वाले हैं, ऐसे श्रीकृष्णाय, श्रियः सहितः कृष्णाय, श्री राधारानी के सहित भगवान श्रीकृष्ण को हम सभी नमस्कार करते हैं।

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।

पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि॥

जिस समय श्री शुकदेव जी का उपनयन आदि संस्कार भी नहीं हुआ था, उस समय वे व्यस्त होकर वन की ओर चल पड़े। उन्हें वन की ओर जाते देख उनके पिता वेदव्यासजी पुत्रमोह से व्यथित होकर उन्हें पुकारने लगे — "हे बेटा! हे पुत्र! मत जाओ, रुक जाओ।" उस समय वृक्षों ने तन्मय होकर श्री शुकदेव जी की तरफ से उत्तर दिया — "हे वेदव्यास जी! आप अत्यंत ज्ञानी हैं और इस प्रकार पुत्रमोह से दुखी हो रहे हैं। हम अज्ञानी हैं, परंतु हमें देखिए — प्रतिवर्ष हम में न जाने कितने फल लगते हैं, उत्पन्न होते हैं और नष्ट हो जाते हैं, परंतु हम दुखी नहीं होते। इसलिए आप भी दुख त्याग दीजिए क्योंकि आत्मरूप से श्री शुकदेव जी हम सबके हृदय में विराजमान हैं।" ऐसे सर्वभूतहृदय श्री शुकदेव जी को मैं नमस्कार करता हूँ।

नैमिषे सूतमासीनमभिवाद्य महामतिम्। कथामृतरसास्वादकुशलः शौनकोऽब्रवीत्॥

तीर्थों में श्रेष्ठ नैमिषारण्य, जो अत्यंत पवित्र है और साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाला है — ऐसे नैमिषारण्य तीर्थ में विराजमान परम विद्वान श्री सूत जी से कथामृत का रसास्वादन करने में कुशल श्री शौनक जी ने कहा —

अज्ञानध्वान्तविध्वंस कोटिसूर्यसमप्रभा।

सूताख्य! आहि कथासारं मम कर्णरसायनम्॥

सूत जी! आपका ज्ञान अज्ञानता रूपी अंधकार का नाश करने में करोड़ों सूर्य के समान है, इसलिए आप हमारे कानों को अमृत के समान मधुर लगने वाली कथा सुनाइए — वह कथा जो भक्ति, ज्ञान, वैराग्य को प्रदान करने वाली हो, जिससे माया-मोह का नाश हो, जिसे वैष्णव भक्तों ने कही हो। इस घोर कलिकाल के कारण प्रायः जीव आसुरी स्वभाव के हो गए हैं — वह कथा उन्हें शुद्ध करने वाली हो, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तथा पवित्र से पवित्र हो, और शीघ्र ही भगवान श्रीकृष्ण को प्राप्त कराने वाली हो।

कालव्यालमुखग्रासत्रासनिर्णाश हेतवे। श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम्॥

कालरूपी महान सर्प के मुख का ग्रास बने हुए प्राणियों के दुख की निवृति के लिए, कलिकाल में श्री शुकदेव जी ने श्रीमद्भागवत का प्रवचन किया।

जो स्वयं तो लड़े और दूसरों को भी लड़ाए, उसे धुंधकारी कहते हैं। तीन माह के पश्चात गाय ने भी एक सुंदर बालक को जन्म दिया, जिसका संपूर्ण शरीर मनुष्य के समान था और कान गाय के समान थे। इसलिए आत्मदेव ने उसका नाम **गोकर्ण** रखा। गाँव वालों ने जब यह सुना कि गाय ने भी बच्चे को जन्म दिया है, सभी उस बालक को देखने आते और कहते — आज आत्मदेव का भाग्य उदय हुआ है, जो गाय ने भी देवता के समान बच्चे को जन्म दिया। जब ये दोनों बड़े हुए, तो ख्याति तो दोनों ने प्राप्त की —

गोकर्णः पण्डितो ज्ञानी, धुंधकारी महाखलः।

गोकर्ण महान पंडित हुए और धुंधकारी महान दुष्ट हुआ। वह स्नान नहीं करता, अपवित्र रहता, मांस-मदिरा का भक्षण करता, चोरी करता, दूसरों के घर में आग लगा देता, खेलते हुए निरपराध बच्चों को कुएँ में डाल देता। इसके इस दुष्ट कर्म को देखकर आत्मदेव ने उसे समझाने का प्रयास किया, परंतु वह क्रोधित हो गया और पिता को मारने दौड़ा। यह देखकर आत्मदेव को बहुत कष्ट हुआ। वह सोचने लगे — "कहाँ जाऊँ, क्या करूँ?

इसी समय ज्ञानी गोकर्ण जी वहाँ पधारे और उन्होंने पिता आत्मदेव को वैराग्य का उपदेश दिया — पिताजी, यह संसार सारहीन है, दुख देने वाला है और मोह में डालने वाला है।

इस संसार में किसका पुत्र और किसका धन? सभी स्नेह के कारण निरंतर जल रहे हैं।"

न चेन्द्रस्य सुखं किञ्चिन्न सुखं चक्रवर्तिनः।
सुखमस्ति विरक्तस्य मुनेरेकान्तजीविनः॥

इस संसार में ना तो इन्द्र को सुख है और ना चक्रवर्ती को। यदि कोई सुखी है, तो वह है एकांत जीवी विरक्त महापुरुष।

दीन कहे धनवान सुखी, धनवान कहे सुख राजा को भारी।
राजा कहे महाराजा सुखी, महाराजा कहे सुख इन्द्र को भारी।
इन्द्र कहे चतुरानन सुखी है, चतुरानन कहे सुख शिव को भारी।
तुलसी जी जान विचारी, कहे — हरि भजन बिना सब जीव दुखारी॥

संत कहते हैं—

कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन बिन रहत उदास।
थोड़े-थोड़े सब दुखी, सुखी राम के दास॥

"पिताजी, संतान रूपी अज्ञानता का त्याग कर दीजिए और सब कुछ छोड़कर वन में चले जाइए। पिता आत्मदेव ने कहा — बेटा, वन में जाकर मुझे किस प्रकार का साधन-भजन करना चाहिए, यह बताने की कृपा करो। गोकर्ण जी कहते हैं...

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षक -आचार्य शिवम मिश्र जी । www.ramdeshkprashikshan.in । मो॰ 8368032114

पाणिनीय व्याकरण से नहीं बनता, बल्कि वैदिक व्याकरण में धीमहि का प्रयोग होता है। आचार्य श्री बंशीधर जी ने इस मंगलाचरण के 108 अर्थ किए हैं। उनमें से हम यहाँ ब्रह्मपरक अर्थ का आश्रय लेते हैं—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्।
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः॥
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गो मृषा।
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि॥

जिससे इस जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है—

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति।

जो सत्पदार्थों में अनुगत हैं और असत्पदार्थों से पृथक हैं, सर्वज्ञ हैं, स्वयंप्रकाश हैं, जिन्होंने सृष्टि के आदि में आदिकवि ब्रह्मा जी को संकल्पमात्र से वेद का ज्ञान प्रदान किया, जिसके विषय में बड़े-बड़े विद्वान भी मोहित हो जाते हैं। जैसे तेज में जल, जल में स्थल और स्थल में जल का भ्रम होता है, उसी प्रकार यह त्रिगुणमयी जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति रूपा सृष्टि मिथ्या होने पर भी सत्य प्रतीत हो रही है। जो अपने स्वयंप्रकाश से माया एवं माया के कार्यों से सर्वथा मुक्त हैं, ऐसे सत्यस्वरूप भगवान का हम ध्यान करते हैं।

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमोनिर्मत्सराणां सतां
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः
सद्यः हृद्यवरुध्यते त्र कृतिभिः शुश्रूषुभिः तत्क्षणात्॥

इस श्लोक में अनुबंध चतुष्टय का वर्णन किया गया है— इस श्रीमद्भागवत का विषय क्या है? **धर्मः प्रोज्झितकैतवः** — इसमें कपट रहित परम धर्म का निरूपण किया गया है। यही भागवत का विषय है। भागवत के अधिकारी कौन हैं? **निर्मत्सराणां** — मत्सरता से रहित सत्पुरुष ही इसके अधिकारी हैं।
श्रीधर स्वामी जी कहते हैं— **"परोत्कर्ष सहनं न इति मत्सरः"**। जो दूसरे के उत्कर्ष को सहन नहीं कर सकता, उसे ही मत्सर कहते हैं। **तापत्रयोन्मूलनम्** — आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक — इन तीन प्रकार के तापों का नाश करना ही भागवत का प्रयोजन है। इसका संबंध क्या है?इस भागवत की श्रवण करने की इच्छा मात्र से भगवान श्रीहरि हृदय में आकर बंदी बन जाते हैं। यही भागवत का संबंध है।

ऐसे महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित श्रीमद्भागवत के रहते हुए अन्य शास्त्रों से क्या प्रयोजन?

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षक -आचार्य शिवम मिश्र जी । www.ramdesikprashikshan.in । मो॰ 8368032114

है? उस समय उन्हें अपने पुत्र परमवीतराग श्री शुकदेव जी का स्मरण आया। उन्होंने अपने शिष्यों को भागवत के कुछ श्लोक याद कराए। वे व्यास-शिष्य वन में जाते तो भागवत के श्लोकों का गान करते। एक दिन वे उसी वन में पहुँचे जहाँ श्री शुकदेव जी ध्यान में बैठे हुए थे। एक शिष्य के मुख से निकला श्लोक:

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम्।
रन्ध्रान् वेणोः अधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दैः
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः॥

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सिर पर मयूर का पिच्छ धारण कर रखा है। श्रेष्ठ नट के समान उनका सुंदर वेश है। कान में कनेर का पुष्प, शरीर में पीतांबर और गले में एक वनमाला शोभायमान हो रही है। अपने चरणकमलों से वृंदावन को पवित्र करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ग्वाल-बालों के साथ वन में प्रवेश कर रहे हैं। ग्वाल-बाल भगवान की कीर्ति का गान कर रहे हैं।

श्री शुकदेव जी ने भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप का इतने दिनों में वर्णन सुना तो उनका ध्यान टूट गया। खड़े होने वाले थे कि मन में विचार आ गया कि जो स्वरूपवान होते हैं उन्हें अपने रूप का बहुत अभिमान होता है। इसी समय व्यास जी के दूसरे शिष्य ने दूसरा श्लोक सुनाया:

"अहो बकीं यं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम॥"

इस श्लोक में भगवान के स्वभाव का वर्णन किया गया है। अहा! बकासुर की बहन, वह पूतना — श्रीकृष्ण को मारने की इच्छा से अपने स्तनों में कालकूट विष लगाकर आई थी, परंतु भगवान की करुणा-कृपा तो देखो — उसे भी माता की गति प्रदान कर दी। ऐसे श्रीकृष्ण को छोड़कर हम किसकी शरण ग्रहण करें?

श्री शुकदेव जी ने जैसे ही श्रीकृष्ण के स्वभाव का यह वर्णन सुना, उठ खड़े हुए। कहा — "आप लोग बहुत अच्छे श्लोक सुना रहे हो, और सुनाओ।" व्यास शिष्यों ने कहा — "हमें तो इतना ही आता है। यदि आपको और सुनने

महारथी विद्यमान थे, उस समय भी आपने मेरे पुत्रों को खरोंच तक नहीं आने दी। और कहां तक सुनाऊं — आपने अभी-अभी अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से उत्तरा के गर्भ की रक्षा की। इसलिए प्रभु! मैं तो आपसे यही वरदान मांगती हूं...

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो |
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ||

मुझे जीवन में प्रत्येक पग में विपत्तियों की ही प्राप्ति हो क्योंकि विपत्ति होगी तो आपके दर्शन की प्राप्ति होगी और आपका दर्शन संसार सागर से मुक्त कराने वाला है।

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः |
विपद् विस्मरणं विष्णोः सम्पन्ना नारायणं स्मृतिः ||

विपत्ति, विपत्ति नहीं है, संपत्ति, संपत्ति नहीं है; भगवान का विस्मरण होना ही विपत्ति है और भगवान का स्मरण करना ही संसार की सबसे बड़ी संपत्ति है। परम पूज्य गोस्वामी जी कहते हैं—

कह हनुमंत विपति प्रभु सोई | जब तक सुमिरन भजन न होई ||

विपत्ति वह है जब भगवान का विस्मरण हो जाता है—

सुख के माथे सिल पड़े जो नाम हृदय से जाए |
बलिहारी वा दुख की जो पल-पल नाम जपाए ||

वह सुख किस काम का जिसके आने से भगवान का नाम हृदय से चला जाता है, उससे अच्छा तो वह दुख है जिसके कारण निरंतर भगवान का जप होता है। माता कुंती ने जब इस प्रकार स्तुति की तो भगवान श्रीकृष्ण गद्गद हो गए, उन्हें अविचल भक्ति का आशीर्वाद दिया और बुआ कुंती की प्रसन्नता के लिए कुछ दिन के लिए और हस्तिनापुर में रुक गए।

एक दिन भगवान श्रीकृष्ण ने एकांत में राजा युधिष्ठिर को रोते हुए देखा। भगवान ने धर्मराज युधिष्ठिर से कहा— महाराज, आप सार्वभौम सम्राट हैं, समूची पृथ्वी पर आपका ही आधिपत्य है, अतुलनीय ऐश्वर्य आपके पास है, फिर आप इस प्रकार दुखी क्यों हैं?"

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षकः आचार्य शिवम मिश्र जी । www.ramdesikprashikshan.in । मो॰ 8368032114

भोले घनश्याम! सुनो भीष्म भगतराज, मोहे जन्म देने वाले जग में अपार हैं।
सिंधु, खंभ, धरणि, पाषाण से प्रकट होत कहां, लव बखानौं मेरे अमित अवतार हैं।
कोऊ कहे वसुदेव-देवकी को लाल हौं, कोऊ कहे नंद-यशोदा को कुमार हौं।
जाको एक बाप बचावै निज लाज, सोई मेरी; कौन लाज? मेरे बाप को हजार हैं।

पितामह भीष्म ने अंतिम समय भगवान के रास का स्मरण किया और अपने प्राणों को श्रीकृष्ण के चरणों में विलीन कर दिया। उस समय देवता जय जयकार करने लगे, पुष्पों की वर्षा और ढोल-नगाड़े बजने लगे।

बोलिए भक्तवत्सल भगवान की जय!

परीक्षित के जन्म-कर्म की कथा और ब्राह्मण के द्वारा श्राप देना

धर्मराज युधिष्ठिर ने पितामह की अंत्येष्टि क्रिया की। तत्पश्चात पांडवों से आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण द्वारका को प्रस्थान किए। द्वारका पहुँचकर उन्होंने सर्वप्रथम अपने माता-पिता को प्रणाम किया और फिर महल में प्रवेश किया...

अश्वत्थाम्नोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोऽरुतेजसा।
उत्तराया हतो गर्भ ईशेनाजीतः पुनः।।
तस्य जन्म महाबुद्धेः कर्माणि च महात्मनः।
निधनं च यथैवासीत् स प्रेत्य गतवान् यथा।।

सौम्य सौनक जी, श्री सूतजी से पूछते हैं — अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से उत्तरा का जो गर्भ नष्ट हो गया था, और जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने पुनः जीवित कर दिया था, उन महाराज परीक्षित के जन्म, कर्म और किस प्रकार उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई, यह बताइए। सूत जी कहते हैं — सौनक जी! उत्तरा के गर्भ में स्थित उस दशमास के शिशु ने अपने सामने एक अंगुष्ठ मात्र के सुंदर पुरुष का दर्शन किया। उनका श्यामल वर्ण था और श्यामल शरीर पर पीताम्बर शोभायमान हो रहा था। सुंदर चार भुजाएँ थीं। वह अपने हाथ में जलती हुई गदा लेकर शिशु के चारों ओर घूम रहे थे।
और जैसे सूरज अपनी किरणों से कोहरे को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षक -आचार्य शिवम मिश्र जी | www.ramdesikprashikshan.in | मो॰ 8368032114

कहा—"हम तुम्हारे पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जा रहे हैं। सती ने जैसे ही यह सुना, दौड़ी-दौड़ी भगवान शंकर के पास आईं और उनसे कहा—

प्रजापतेस्ते श्वसुरस्य साम्प्रतं निर्यापितो यज्ञमहोत्सवः किल।
वयं च तत्राभिसराम वाम ते यद्यर्थिताभी विबुधा व्रजन्ति हि॥

"प्रभु! आज आपके श्वसुर दक्ष प्रजापति के यहां यज्ञ महोत्सव हो रहा है। सभी देवता वहीं जा रहे हैं, इसलिए हमें भी वहां चलना चाहिए। यदि आप कहते हैं कि हमें बुलावा नहीं आया, तो कहा गया है—

अनाहुता अप्यभियन्ति सौहृदं भर्तुर्गुरोर्देहकृतश्च केतनम्॥

अपने पति, गुरु और पिता के यहां बिना बुलाए भी चले जाना चाहिए। भगवान शंकर ने कहा—"सती! तुम्हारी बात सत्य है, परंतु जहां जानबूझकर न बुलाया गया हो, वहां नहीं जाना चाहिए।

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा | जाइय बिनु बोलहुं न संदेहा ||
तदपि विरोध मान जहाँ कोई | तहाँ गए कल्याणु न होई ||

ऐसी जगह जाने से कल्याण नहीं होता। आज भगवान शंकर ने माता सती को बुलाया और बताया कि तुम्हारे पिता दक्ष प्रजापति ने हमें क्यों नहीं बुलाया। सारी घटना जो यज्ञ में घटी थी, वह सब कह सुनाई और अंत में कहा – "सती, यदि तुम मेरी बात न मानकर वहाँ जाओगी, तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा, क्योंकि सम्मानित व्यक्तियों का अपमान उनकी मृत्यु का कारण बनता है।" ऐसा कह भगवान शंकर मौन हो गए।

माता सती को जब पिता का प्रेम याद आता तो द्वार से बाहर निकल आती और भगवान शंकर का जब स्मरण होता तो द्वार के अंदर आ जाती। अंततः उन्होंने पिता जी के यहाँ जाने का निर्णय किया और चल पड़ीं। भगवान शंकर ने सती को जाते हुए देखा तो पीछे से अपने गणों को भेज दिया और सती का जितना भी सामान था वह सब उनके पीछे-पीछे भेज दिया। माता सती जब पिता दक्ष प्रजापति के यहाँ पहुँचीं तो—

सादर मिलहिं मिलहिं इक माता | भगिनी देखि बहु मुसुकाता ||

सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं प्रशिक्षक: -आचार्य शिवम मिश्र जी | www.ramdesikprashikshan.in | मो॰ 8368032114

इस भारतवर्ष में भी–– मलय, वयनाक, श्रीशैल, चित्रकूट और गोवर्धन नामक अनेकों पर्वत तथा गंगा, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सरयू आदि अनेकों पुण्य-पवित्र नदियाँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन, स्पर्श और स्नान से अनेकों आप, ताप, संताप निवृत्त हो जाते हैं। इस भारतवर्ष की महिमा का गान करते हुए देवता कहते हैं—**अहो एतद्भारतं वर्षं मनुष्येभ्यः पुण्यम्।**

न यत्र वैकुण्ठकथा सुधापगा न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः।
न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः सुरेशलोकोपि न वै स सेव्यताम्॥ (5.19.24)

जहाँ भगवान श्रीहरि की अमृतमयी कथा सरिता प्रवाहित नहीं होती, जहाँ भगवान के भक्त, साधु-महात्मा निवास नहीं करते, जहाँ यज्ञ आदि महोत्सव नहीं होते – यदि वह देवलोक भी हो, तो वहाँ नहीं निवास करना चाहिए। यदि स्वर्ग का सुख भोगने के पश्चात हमारे कुछ शेष पुण्य बचे हों, तो हम भगवान से प्रार्थना करते हैं– हमारा जन्म भारतभूमि में हो, जिससे हम भगवान का गुणगान कर सकें, उन्हें प्राप्त कर सकें। कवि गया प्रसाद जी कहते हैं-

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥
वृक्षों में चन्दन बड़ा और नागों में जैसे शेष।
नदियों में गंगा बड़ी और देशों में भारत देश॥

(बोलिए भारतभूमि की जय)

राजा परीक्षित श्री शुकदेव जी से पूछते हैं - प्रभो! नरक नाम के लोक इसी त्रिलोकी में हैं अथवा इसके बाहर हैं? उनकी कितनी संख्या है और किस प्रकार की यातना दी जाती है वहां? श्री शुकदेव जी कहते हैं - परीक्षित! नरक नाम के लोक इसी त्रिलोकी में हैं, दक्षिण दिशा की ओर हैं। उनकी संख्या विशेष रूप से **28** बताई गई है। नाम हैं -- **तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, सूकरमुख, अंधकूप, कृमिभोजन, सन्दंश, तप्तसूर्मी, वज्रकंटक (शाल्मली), वैतरणी, पुयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचि और अयःपान।**

राम देशिक प्रशिक्षण केंद्र

विद्यालय शुल्क जमा करने का माध्यम

खाता नं॰ Ac. no॰ 50200094356653

Ifsc : HDFC0001059

नोट- शुल्क जमा करने के बाद पेमेंट स्टेटस का स्क्रीनशॉट लेकर हमें जरूर भेजें ,या कॉल के माध्यम से हमें सूचना दें । और अपनी शुल्क राशि की रसीद जरूर प्राप्त करें विद्यालय से।

Scan & Pay Using PhonePe App

स्कैन कोड

Ram Deshik Prashikshan Kendra

Paytm पे G Pay 8368032114

UPI: 8368032114-2@ibl

संपर्क सूत्र- 8368032114 Website: www.kathahindi.com

अगर आप भागवत सप्ताहिक कथा के नोट्स, राम कथा नोट्स व शिव कथा के नोट्स प्राप्त करना चाहते हैं। तो इस लिंक के द्वारा आप आर्डर कर सकते हैं स्पीड पोस्ट के द्वारा जल्द ही आपके पास पहुंच जाएंगे।

8368032114
8516827975

श्रीराम देशिक प्रशिक्षण केंद्र

भागवत, शिव कथा, राम कथा, कर्मकांड की ऑनलाइन कक्षा ।

यदि आप श्रीमद्भागवत सप्ताहिक कथा, श्री शिव महापुराण कथा, श्री राम कथा, श्री देवी भागवत कथा व कर्मकांड पूजा पद्धति की विधिवत रूप से तैयारी करना चाहते हैं ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से तो आप देश का सर्वश्रेष्ठ संस्थान श्री राम देशिक प्रशिक्षण केंद्र से जुड़कर विधिवत रूप से तैयारी कर सकते हैं।

www.ramdeshikprashikshan.in

Vrindavan Dham, Mathura (U.P)